

RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

Key Point

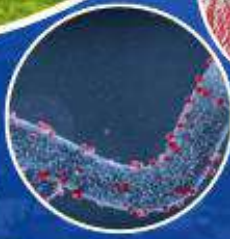
DATE

दिसंबर

26

2024

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors



o-Detention
policy

By Ankit Avasthi Sir

भारत के कच्चे तेल के भंडार / India's Crude Oil Reserves

भारत के तीन रणनीतिक भंडारण कक्षों में कच्चे तेल का भंडार वर्तमान में लगभग 3.61 मिलियन टन है, जो उनकी क्षमता का 67% है। लोकसभा की स्थायी समिति ने भंडारण बनाए रखने पर सतर्कता बरतने की आवश्यकता पर जोर दिया है।

मुख्य बिंदु:

1. रणनीतिक भंडार का प्रबंधन:

- समिति ने पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय को भारतीय रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार का इष्टतम स्तर बनाए रखने की सिफारिश की।
- इसका उद्देश्य तेल संकट की स्थिति में देश की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

2. कच्चे तेल भंडारण के लिए बजट आवंटन:

- वित्तीय वर्ष 2023-24 में कच्चे तेल भंडारण भरने के लिए ₹5,000 करोड़ का बजट आवंटित किया गया था, लेकिन कोई खर्च नहीं हुआ।
- वित्तीय वर्ष 2024-25 में इसके लिए कोई धनराशि आवंटित नहीं की गई है।
- वित्तीय वर्ष 2025-26 में इसके लिए प्रावधान किए जाने की योजना है।

3. पेट्रोलियम उत्पादों की बढ़ती मांग:

- समिति ने कहा कि तेल मंत्रालय और तेल सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों का पूंजीगत व्यय पेट्रोलियम उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने और नेट-जीरो लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपर्याप्त है।
- इसे बढ़ाने की आवश्यकता है।

4. रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार के निर्माण के लिए धनराशि:

- वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट में ₹408 करोड़ की राशि चरण- II के तहत भूमिगत भंडारण कक्षों के निर्माण के लिए आवंटित की गई है।
- इस निर्माण कार्य की शुरुआत अभी तक नहीं हुई है।

5. भंडारण बनाए रखने की आवश्यकता:

- समिति ने वैश्विक भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं और प्रमुख तेल आपूर्तिकर्ताओं की स्थिति को देखते हुए कच्चे तेल का पर्याप्त भंडारण बनाए रखने के लिए सतर्कता बरतने की आवश्यकता पर जोर दिया है।

दुनिया के प्रमुख रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार:

1. संयुक्त राज्य अमेरिका

- विश्व में सबसे बड़ा कच्चे तेल भंडार, क्षमता: 714 मिलियन बैरल।

2. चीन

- दूसरा सबसे बड़ा भंडार, क्षमता: 475 मिलियन बैरल।
- चीन ने 2007 में कच्चा तेल भंडारण शुरू किया।

3. जापान

- तीसरा सबसे बड़ा भंडार, क्षमता: 324 मिलियन बैरल।

भारत के रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार (SPRs):

- कुल क्षमता:** 5.33 मिलियन मीट्रिक टन (MMT) कच्चे तेल का भंडारण।
- स्थान**
 - विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश: 1.33 MMT
 - मंगलुरु, कर्नाटक: 1.5 MMT
 - पडुर, कर्नाटक: 2.5 MMT

भारत द्वारा कच्चे तेल का आयात:

आंकड़े और प्रमुख स्रोत:

- आयात पर निर्भरता:** FY25 के पहले छह महीनों में भारत की कच्चे तेल पर निर्भरता बढ़कर 88.2% हो गई, जबकि FY24 में यह 87.6% थी।
 - भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा कच्चे तेल आयातक है।
- मुख्य आयात स्रोत:** इराक, सऊदी अरब, रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका, और संयुक्त अरब अमीरात।
- शीर्ष तेल उत्पादक देश (2024):** संयुक्त राज्य अमेरिका, सऊदी अरब, रूस, कनाडा, और चीन।
- शीर्ष तेल उपभोक्ता देश:** संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, भारत, रूस, और सऊदी अरब।

भारत द्वारा कच्चे तेल आयात में आने वाली चुनौतियां:

- मूल्य अस्थिरता:** वैश्विक तेल कीमतों में उतार-चढ़ाव आयात लागत और देश की अर्थव्यवस्था पर बड़ा प्रभाव डालता है।
- भू-राजनीतिक जोखिम:** मध्य पूर्व, रूस और वेनेजुएला जैसे प्रमुख तेल उत्पादक क्षेत्रों में राजनीतिक अस्थिरता या संघर्ष आपूर्ति श्रृंखला को बाधित कर सकते हैं।
- आयात पर निर्भरता:** भारत अपनी 85% आवश्यकता के लिए आयात पर निर्भर है, जिससे आपूर्ति व्यवधानों के प्रति संवेदनशील है।
- विनिमय दर में उतार-चढ़ाव:** कच्चे तेल का भुगतान अमेरिकी डॉलर में होने के कारण, रुपये की कमजोरी से आयात लागत बढ़ जाती है।
- पर्यावरणीय चिंताएं:** कच्चे तेल का उत्पादन और खपत पर्यावरणीय समस्याओं को बढ़ाती है, जिससे ऊर्जा जरूरतों और स्थिरता में संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- स्रोतों का विविधीकरण:** आयात स्रोतों में विविधता लाने में प्रतिस्पर्धा और विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं से अलग-अलग शर्तों के कारण कठिनाइयां होती हैं।

भारतनेट / BharatNet

भारतनेट ने ऑप्टिकल फाइबर, रेडियो और सैटेलाइट तकनीकों का उपयोग करते हुए 2.14 लाख से अधिक ग्राम पंचायतों को जोड़ा है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल कनेक्टिविटी को बढ़ावा मिला है।

भारत के डिजिटल नेटवर्क विस्तार और कनेक्टिविटी प्रयास:

- **नेटवर्क विस्तार:** 2,14,283 ग्राम पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क से जोड़ा गया है।
- **सस्ती इंटरनेट सेवा:** ग्रामीण क्षेत्रों में ₹99/माह से ब्रॉडबैंड सेवाएं उपलब्ध।
- **पब्लिक वाई-फाई हॉटस्पॉट्स:** 1,04,574 हॉटस्पॉट्स गांवों में स्थापित।
- **फाइबर टू द होम (FTTH):** 11,60,367 कनेक्शन चालू।

भारतनेट परियोजना के बारे में:

शुरुआत और नामकरण:

- यह परियोजना **अक्टूबर 2011** में **राष्ट्रीय ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क (NOFN)** के रूप में शुरू हुई।
- **2015** में इसे **भारतनेट परियोजना** नाम दिया गया।

उद्देश्य:

- देश के सभी ग्राम पंचायतों में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी उपलब्ध कराना।
- सभी घरों को **2 Mbps से 20 Mbps** की कफायती ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी प्रदान करना।
- ई-गवर्नेंस, ई-स्वास्थ्य, ई-शिक्षा, ई-बैंकिंग, इंटरनेट और अन्य सेवाओं की ग्रामीण भारत में पहुंच सुनिश्चित करना।

भागीदारी और कार्यान्वयन:

- इस परियोजना को राज्यों और निजी क्षेत्र के साथ साझेदारी में पूरा किया जा रहा है।
- **BSNL, रेलटेल और पावर ग्रिड** जैसी सार्वजनिक उपक्रमों की मौजूदा फाइबर संपत्तियों का उपयोग किया गया।
- जहां आवश्यक हुआ, ग्राम पंचायतों को जोड़ने के लिए अतिरिक्त फाइबर बिछाया गया।

वित्तपोषण:

- परियोजना को **यूनिवर्सल सर्विस ऑब्लिगेशन फंड (USOF)** से वित्त पोषित किया जा रहा है।
- इस फंड का उद्देश्य ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में टेलीकॉम सेवाओं में सुधार करना है।

नोडल एजेंसी:

- परियोजना का क्रियान्वयन **भारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लिमिटेड (BBNL)** नामक एक विशेष उद्देश्य वाहन (SPV) द्वारा किया जा रहा है।
- इसे **25 फरवरी 2012** को **भारतीय कंपनियों अधिनियम 1956** के तहत पंजीकृत किया गया था।

संशोधित भारतनेट कार्यक्रम 2023:

स्वीकृति और लागत:

- 2023 में सरकार ने संशोधित भारतनेट कार्यक्रम (ABP) को मंजूरी दी।
- कुल लागत: ₹1,39,579 करोड़।

लक्ष्य और उद्देश्य:

1. ऑप्टिकल फाइबर कनेक्टिविटी:

- 2.64 लाख ग्राम पंचायतों (GPs) को रिंग टोपोलॉजी में जोड़ना।
- लगभग 3.8 लाख गैर-GP गांवों को मांग आधारित कनेक्टिविटी प्रदान करना।

2. संचालन और रखरखाव:

- अगले 10 वर्षों तक नेटवर्क का संचालन और रखरखाव।
- **केंद्रीय नेटवर्क ऑपरेटिंग सेंटर (CNOG)** के माध्यम से नेटवर्क अपटाइम की निगरानी।
- **प्रोजेक्ट इंप्लीमेंटेशन एजेंसी (PIA)** को सेवा स्तर समझौते (SLA) के अनुसार भुगतान।

3. पावर बैकअप: ग्राम पंचायतों और ब्लॉक्स में पर्याप्त स्तर का पावर बैकअप।

4. रिमोट फाइबर मॉनिटरिंग सिस्टम (RFMS): ब्लॉक्स में फाइबर मॉनिटरिंग के लिए RFMS की स्थापना।

भारतनेट का कार्यप्रणाली:

1. **स्थापना:** भारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लिमिटेड (BBNL) एक विशेष उद्देश्य वाहन (SPV) के रूप में 2012 में स्थापित किया गया था।
2. **फेज 1:** 2016 में, टेलीकॉम कमीशन ने इस परियोजना को तीन चरणों में लागू करने की मंजूरी दी। पहले चरण में 1 लाख ग्राम पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर केबल से जोड़ने पर ध्यान केंद्रित किया गया।
3. **फेज 2:** दूसरे चरण में ऑप्टिकल फाइबर, रेडियो और सैटेलाइट तकनीकों का उपयोग करके अतिरिक्त 1.5 लाख ग्राम पंचायतों को जोड़ा गया।
4. **फेज 3:** तीसरे चरण का उद्देश्य नेटवर्क को भविष्य के लिए तैयार करना है, जिसमें 5G तकनीकों का एकीकरण, बैंडविड्थ क्षमता को बढ़ाना और अंतिम मील कनेक्टिविटी को मजबूत करना शामिल है। यह चरण अभी भी जारी है।

हाइब्रिड एरोजेल-आईपीकॉम्प-9 / Hybrid Aerogel-IPcomp-9

भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (IISER) पुणे के शोधकर्ताओं ने एक हाइब्रिड एरोजेल IPcomp-9 विकसित किया है, जो इलेक्ट्रॉनिक कचरे से सोने को प्रभावी रूप से निकालने में सक्षम है।

IPcomp-9 हाइब्रिड एरोजेल के बारे में:

- IPcomp-9 एक नवीन हाइब्रिड एरोजेल है, जो विशेष सक्रिय साइट्स के साथ डिजाइन किया गया है।
- इसका उपयोग ई-वेस्ट और दूषित पानी से सोने (गोल्ड) के आयनों को चुनिंदा रूप से निकालने के लिए किया जाता है।

विकास:

- इसे IISER के शोधकर्ताओं द्वारा विकसित किया गया।
- इसमें जिर्कोनियम से बने मेटल-ऑर्गेनिक पॉलीहेड्रल और 2D इमाइन-लिंक्ड कोवैलेंट ऑर्गेनिक फ्रेमवर्क को कोवैलेंट रूप से जोड़ा गया है।
- दोनों सामग्रियों को आयरन नाइट्रेट सॉल्ट की सहायता से कमरे के तापमान पर 2-5 मिनट में थ्रेड किया गया।

अवशोषण तंत्र:

- इमाइन ग्रुप्स और जिर्कोनियम क्लस्टर्स नकारात्मक चार्ज वाले सोने के आयनों को आकर्षित और बांधते हैं।

प्रभावशीलता:

- ई-वेस्ट से 99% तक सोने के आयन निकाले।
- 1689 mg/g (दिन की रोशनी में) और 2349 mg/g (नीली रोशनी में) सोने का निष्कर्षण किया।

ड्यूबल प्रोसेस:

- यह एरोजेल सोखने और अवक्षेपण (adsorption और reduction) दोनों प्रक्रियाओं को सक्षम करता है।

अनुप्रयोग:

- ई-वेस्ट प्रबंधन में क्रांति ला सकता है और संसाधनों की स्थायी पुनर्प्राप्ति को बढ़ावा दे सकता है।
- नदियों, झीलों, भूजल और समुद्र के पानी से अल्ट्रा-ट्रेस मात्रा में सोना निकालने में सक्षम।

पुनः उपयोग:

- इसे 5 बार तक पुनः उपयोग किया जा सकता है।
- सोने के निष्कर्षण के दौरान विषाक्त रसायनों का उपयोग नहीं होता।

आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ:

- यह तकनीक ई-वेस्ट प्रबंधन के लिए एक स्थायी समाधान प्रदान करती है।
- पारंपरिक सोना निष्कर्षण विधियों (जैसे पायरोमेटलर्जी, हाइड्रोमेटलर्जी और साइनाइड निष्कर्षण) की तुलना में यह विधि कम ऊर्जा, समय और लागत लगाती है।
- यह पर्यावरण के लिए सुरक्षित है और खतरनाक खनन प्रथाओं पर निर्भरता कम करती है।

एरोजेल के बारे में:

- संसाधन:** एरोजेल सबसे हल्के ठोस पदार्थों में से एक होते हैं। ये एक पॉलीमर और सॉल्वेंट को मिलाकर जेल बनाकर, फिर जेल से तरल निकालकर उसे हवा से बदलने की प्रक्रिया से बनाए जाते हैं।
- गुण:** एरोजेल्स अत्यधिक प्रवाही और बेहद कम घनत्व वाले होते हैं। इनमें समायोज्य सतह रसायनिकी जैसे फायदे होते हैं और ये 'ठोस हवा' या 'जमी हुई धुआँ' के नाम से भी जाने जाते हैं।
- उपयोग:** ये उत्कृष्ट अवशोषक होते हैं और आमतौर पर पर्यावरण और तेल रिसाव की सफाई, और इंसुलेशन के उद्देश्य से उपयोग किए जाते हैं।

एरोजेल के प्रकार:

- सिलिका एरोजेल:** सबसे सामान्य प्रकार, जो सिलिका से प्राप्त होता है।
- कार्बन एरोजेल:** कार्बनिक अवयवों से बना, उच्च विद्युत चालकता के लिए जाना जाता है।
- धातु ऑक्साइड एरोजेल:** धातु ऑक्साइड जैसे ऐल्यूमिना और आयरन ऑक्साइड से प्राप्त होते हैं।
- पॉलीमर एरोजेल:** कार्बनिक पॉलीमर्स पर आधारित, जो लचीलापन और समायोज्य गुण प्रदान करते हैं।
- हाइब्रिड एरोजेल:** ये मिश्रित सामग्री होते हैं, जो अपनी संरचना में दो या दो से अधिक अलग-अलग प्रकार की सामग्री को जोड़ते हैं।

एरोजेल के उपयोग:

- थर्मल इंसुलेशन:** उच्च प्रवाही और कम थर्मल कंडक्टिविटी के कारण उत्कृष्ट इंसुलेटर होते हैं। इन्हें अंतरिक्ष अन्वेषण, फ़ायोजेनीक्स, और निर्माण सामग्री में उपयोग किया जाता है।
- कैटलिसिस:** उच्च सतह क्षेत्र रासायनिक प्रतिक्रियाओं के लिए सक्रिय स्थल प्रदान करता है, जिससे ये उत्प्रेरक के रूप में उपयोगी होते हैं।
- ध्वनि अवशोषण:** उनके प्रवाही संरचना के कारण प्रभावी ध्वनि अवशोषक होते हैं। इन्हें ध्वनिक पैनलों और शोर कम करने में उपयोग किया जाता है।
- सेंसर:** तापमान, दबाव और आर्द्रता में बदलाव के प्रति संवेदनशील होते हैं, जिससे इन्हें सेंसर अनुप्रयोगों के लिए उपयुक्त बनाते हैं।
- एरोस्पेस:** उनके हल्के और उच्च शक्ति-से-भार अनुपात के कारण अंतरिक्ष यान घटकों में उपयोग होते हैं।

चुनाव नियमों में संशोधन / Amendments to election rules

कांग्रेस पार्टी ने सुप्रीम कोर्ट में 1961 के चुनाव नियमों में हाल ही में किए गए संशोधनों को चुनौती देते हुए रिट याचिका दाखिल की है। ताकि चुनाव प्रक्रिया की निष्पक्षता और विश्वसनीयता को बनाए रखा जा सके।

- केंद्रीय कानून मंत्रालय ने भारत निर्वाचन आयोग की सिफारिश पर चुनाव नियम, 1961 के नियम 93(2)(ए) में संशोधन किया है। इस संशोधन के तहत इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड के सार्वजनिक निरीक्षण पर रोक लगा दी गई है। हालांकि, यह दस्तावेज़ उम्मीदवारों के लिए निरीक्षण के लिए उपलब्ध रहेंगे।

चुनाव आचार नियम, 1961:

1. परिचय:

चुनाव आचार नियम, 1961, भारत में चुनाव प्रक्रिया के सुचारु और निष्पक्ष संचालन के लिए विस्तृत प्रक्रियाओं को निर्धारित करता है। ये नियम जनप्रतिनिधित्व अधिनियम के प्रावधानों के तहत बनाए गए हैं।

2. चुनाव की रूपरेखा:

- ये नियम चुनाव प्रक्रिया के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करते हैं।
- इनमें उम्मीदवारों के नामांकन, मतदान प्रक्रिया, मतगणना, और परिणामों की घोषणा जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल किया गया है।

3. मतदाता की गोपनीयता की सुरक्षा:

- नियमों में मतदाताओं की गोपनीयता सुनिश्चित करने और चुनाव प्रक्रिया की निष्पक्षता बनाए रखने के प्रावधान शामिल हैं।

4. भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ:

- चुनाव अधिकारियों की भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ स्पष्ट रूप से परिभाषित की गई हैं ताकि चुनाव सुचारु और व्यवस्थित रूप से संचालित हो सके।

5. विवाद और शिकायतों का निपटारा:

- नियमों में चुनाव प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न होने वाले विवादों और शिकायतों के समाधान के लिए विस्तृत प्रक्रियाएँ दी गई हैं।

संशोधन के बारे में:

1. नियम 93(2)(ए) का संशोधन:

- 1961 के चुनाव आचार नियम के नियम 93(2)(ए) में संशोधन के बाद, केवल वे चुनाव से संबंधित दस्तावेज़, जो नियमों में स्पष्ट रूप से उल्लेखित हैं, सार्वजनिक निरीक्षण के लिए उपलब्ध होंगे।
- यह संशोधन उन इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड्स, जैसे कि फॉर्म और पर्यवेक्षकों की रिपोर्ट, की सार्वजनिक पहुंच को सीमित करता है, जिनका नियमों में स्पष्ट उल्लेख नहीं है।

- संशोधन से पहले की व्यवस्था:** संशोधन से पहले, सभी चुनाव संबंधित दस्तावेज़, जिनमें सीसीटीवी फुटेज और वीडियो रिकॉर्डिंग शामिल थे, बिना किसी अपवाद के सार्वजनिक निरीक्षण के लिए उपलब्ध थे।
- उम्मीदवारों की पहुंच बरकरार:** इन प्रतिबंधों के बावजूद, उम्मीदवारों को सभी चुनाव दस्तावेज़ों, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक सामग्री भी शामिल है, तक पहुंच बनाए रखने का अधिकार है, ताकि वे चुनाव प्रक्रिया का सत्यापन कर सकें।
- न्यायिक निगरानी:** संशोधित नियमों के तहत प्रतिबंधित सामग्री विशेष मामलों में न्यायिक हस्तक्षेप के माध्यम से अदालत के आदेश पर प्राप्त की जा सकती है।
- संशोधन की आवश्यकता:** यह संशोधन इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड्स के संभावित दुरुपयोग को रोकने के लिए किया गया है, जिसमें मतदाता गोपनीयता पर खतरा और एआई के माध्यम से डेटा में छेड़छाड़ का जोखिम शामिल है।

संशोधनों के खिलाफ उठाए गए मुद्दे:

- पारदर्शिता में कमी:** संशोधन से चुनाव प्रक्रिया की पारदर्शिता और जवाबदेही पर असर पड़ता है।
 - सीसीटीवी फुटेज और वीडियो रिकॉर्डिंग जैसी सामग्री तक सार्वजनिक पहुंच निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।
- संवैधानिक और कानूनी चिंताएँ:** चुनाव आयोग बिना सार्वजनिक परामर्श के नियमों में बदलाव नहीं कर सकता जो नागरिकों के अधिकारों को प्रभावित करते हैं।
 - यह संशोधन हाल ही में पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट द्वारा दिए गए आदेशों के विपरीत है।
- न्यायिक हस्तक्षेप की आवश्यकता:**
 - सुप्रीम कोर्ट से चुनाव से जुड़े रिकॉर्ड्स तक सार्वजनिक पहुंच बहाल करने का आग्रह किया गया है।

राज्यपाल की नियुक्ति / Appointment of Governor

भारतीय संविधान की धारा 155 के अनुसार, "राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति द्वारा उनके हस्ताक्षर और मुहर से नियुक्त किया जाएगा।"

हाल ही में, **राष्ट्रपति ने 5 राज्यों के लिए राज्यपालों की नियुक्ति की घोषणा की है**, जो इस संवैधानिक प्रावधान के तहत की गई हैं।

5 राज्यों के नए राज्यपाल नियुक्तियाँ:

- ओडिशा:** मिजोरम के राज्यपाल **हरि बाबू कंभमपति** को ओडिशा का नया राज्यपाल नियुक्त किया गया है।
- मणिपुर:** मणिपुर के लिए पूर्व गृह सचिव **अजय कुमार भल्ला** को राज्यपाल नियुक्त किया गया है।
- केरल:** केरल का नया राज्यपाल **राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर** को बनाया गया है। वह पहले बिहार के राज्यपाल थे।
- बिहार:** केरल के मौजूदा राज्यपाल **आरिफ मोहम्मद** को बिहार का नया राज्यपाल नियुक्त किया गया है।
- मिजोरम:** पूर्व सेना प्रमुख और केंद्रीय मंत्री रहे **वीके सिंह** को मिजोरम का राज्यपाल बनाया गया है।

राज्यपाल के बारे में:

- राज्य का प्रमुख कार्यकारी प्रमुख:** राज्यपाल राज्य का प्रमुख कार्यकारी प्रमुख होता है, जो कनाडाई मॉडल के सिद्धांतों का पालन करता है।
- नियुक्ति की परंपरा:** राज्यपाल उस राज्य से नहीं होना चाहिए, जहां उन्हें नियुक्त किया गया है, ताकि वह स्थानीय राजनीतिक प्रभाव से स्वतंत्र रहें।
- मुख्यमंत्री से परामर्श:** राष्ट्रपति राज्यपाल की नियुक्ति से पहले राज्य के मुख्यमंत्री से परामर्श करते हैं, ताकि संवैधानिक मशीनरी का संचालन सुचारु रूप से हो सके।
- नियुक्ति:** राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा उनके हस्ताक्षर और मुहर से एक वॉरंट के माध्यम से की जाती है। यह एक नामित पद है, न कि चुनाव द्वारा चयनित पद।
- कार्यकाल:** राज्यपाल राष्ट्रपति की इच्छा पर कार्य करता है और उसे कभी भी हटाया जा सकता है।
- पद की शपथ:** राज्यपाल को राज्य के उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश द्वारा शपथ दिलाई जाती है। यदि मुख्य न्यायाधीश अनुपस्थित हों, तो उच्च न्यायालय के वरिष्ठतम न्यायाधीश शपथ दिलाते हैं।
- राज्यपाल के विशेषाधिकार:** राज्यपाल के वेतन और भत्तों को उनके कार्यकाल के दौरान घटित नहीं किया जा सकता। ये संसद द्वारा निर्धारित होते हैं और पद से संबंधित विशेषाधिकारों को शामिल करते हैं।

राज्यपाल से संबंधित संवैधानिक प्रावधान:

- अनुच्छेद 153:** प्रत्येक राज्य का एक राज्यपाल होना चाहिए, और एक व्यक्ति एक से अधिक राज्यों का राज्यपाल बन सकता है।
- नियुक्ति:** राज्यपाल केंद्र सरकार का नामांकित व्यक्ति होता है, जिसे राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया जाता है।
- राज्यपाल की भूमिका:**
 - वह राज्य का संवैधानिक प्रमुख होता है और राज्य की मंत्रिपरिषद (CoM) की सलाह मानने के लिए बाध्य होता है।
 - वह केंद्र और राज्य सरकार के बीच महत्वपूर्ण कड़ी का काम करता है।
- अनुच्छेद 157 और 158:** राज्यपाल पद के लिए पात्रता मानदंड:
 - भारत का नागरिक
 - कम से कम 35 वर्ष की आयु
 - संसद या राज्य विधानसभा का सदस्य नहीं
 - लाभ के पद पर नहीं होना चाहिए
- अनुच्छेद 161:** राज्यपाल को क्षमादान और दंडविराम की शक्ति प्राप्त है।
- अनुच्छेद 163:** राज्यपाल को मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में मंत्रिपरिषद से सहायता और सलाह प्राप्त होती है, सिवाय विवेकाधीन शक्तियों के।
- अनुच्छेद 164:** राज्यपाल राज्य के मुख्यमंत्री और अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करता है।
- अनुच्छेद 200:** राज्यपाल राज्य विधानसभा द्वारा पारित विधेयक को अनुमति देता है, उसे रोकता है, या राष्ट्रपति के विचार के लिए सुरक्षित रखता है।
- अनुच्छेद 213:** राज्यपाल कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में अध्यादेश जारी कर सकता है।

सागर द्वीप / Sagar Island

पश्चिम बंगाल में स्थित सागर द्वीप, जहां हर जनवरी में प्रसिद्ध गंगासागर मेला आयोजित होता है, अब जलवायु परिवर्तन से प्रभावित हो रहा है।

सागर द्वीप के बारे में:

सागर द्वीप, जिसे गंगासागर या सागर द्वीप भी कहा जाता है, बंगाल की खाड़ी के महाद्वीपीय शेल पर स्थित गंगा डेल्टा में स्थित है।

स्थान: सागर द्वीप गंगा डेल्टा में स्थित है, जो बंगाल की खाड़ी के महाद्वीपीय शेल पर स्थित है।

भौगोलिक विशेषताएँ:

- मुरीगंगा नदी की बटलासागर और महिसानी द्वीपों को अलग करती है।
- यह द्वीप रेत के समूह के तहत वर्गीकृत किया जाता है, जिसमें महिसानी और घोरामारा द्वीप भी शामिल हैं।
- यह सुंदरबन का हिस्सा होने के बावजूद, यहां बाघों का वास, मंग्रोव वन और अन्य सुंदरबन डेल्टा के छोटे नदी उपनदियाँ नहीं पाई जातीं।

धार्मिक महत्व: सागर द्वीप एक प्रमुख हिन्दू तीर्थ स्थल है, जहां हर साल मकर संक्रांति के दौरान गंगासागर मेला आयोजित होता है, जो दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी मानव जमावड़ा है।

- सागर द्वीप पर स्थित कपिल मुनि मंदिर एक प्रमुख तीर्थ स्थल है, जो श्रद्धालुओं के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र है।

गंगासागर मेला के बारे में:

- यह कुम्भ के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मानव जमावड़ा माना जाता है।
- यह मेला मकर संक्रांति के दौरान हर साल आयोजित होता है।
- मेला सागर द्वीप पर आयोजित होता है।
- इसे भारतीय महाकाव्य जैसे रामायण और महाभारत में उल्लेखित किया गया है, जिससे इसकी उपस्थिति 400 ईसा पूर्व तक की मानी जाती है।
- श्रद्धालु गंगा में स्नान करने के बाद कपिल मुनि के मंदिर में दर्शन करने जाते हैं।

कपिल मुनि कौन हैं?

- कपिल मुनि या महर्षि कपिल एक वेदिक ऋषि हैं, जिन्हें भारतीय दर्शन के सांख्य प्रणाली के पहले प्रवर्तक के रूप में माना जाता है। वे भारतीय उपमहाद्वीप में छठी या सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास जीवित थे। महर्षि कपिल ने भक्ति योग के माध्यम से मुक्ति प्राप्त करने की प्रक्रिया का उपदेश दिया, जिसे आज भी अनुयायी ध्यान और साधना के रूप में अपनाते हैं।



जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:

- **सागर द्वीप जलवायु परिवर्तन का हॉटस्पॉट:** सागर द्वीप जलवायु वैज्ञानिकों के लिए एक उदाहरण बन गया है, जो भारत के जलवायु भविष्य को दर्शाता है।
- **तेजी से तटीय कटाव:** सुंदरबन में समुद्र स्तर औसतन 3 सेंटीमीटर (1.2 इंच) प्रति वर्ष बढ़ा है, और पिछले 40 वर्षों में 12% तटरेखा खो चुकी है।

तटीय कटाव के कारण:

- **मानव हस्तक्षेप:** मेला स्थल विस्तार के लिए रेत के टीले और वनस्पति की कटाई।
- **तटीय नियमन क्षेत्र का उल्लंघन:** सागर द्वीप पर निर्माण गतिविधियाँ।
- **नदी जल प्रवाह में कमी:** गंगा-मेघना-ब्रह्मपुत्र नदी प्रणाली से कम होने वाले अवसादन के कारण भूमि की हानि।
- **तीर्थयात्रियों की संख्या में वृद्धि:** गंगासागर मेला के दौरान जल प्रदूषण में वृद्धि।

आगे का रास्ता:

- तटीय राज्य और संघ शासित प्रदेशों में CZMAS को समुद्र स्तर में वृद्धि और निम्न भूमि के जलमग्न होने के खतरों पर विशेषज्ञ पैनल के सुझावों को IIMPs में शामिल करना चाहिए।

मादा शिशु मैमथ- याना / Baby Mammoth-Yana

रूस के साइबेरियाई क्षेत्र में शोधकर्ताओं द्वारा 50,000 साल पुराने मादा शिशु मैमथ का अवशेष, जिसे “याना” नाम दिया गया है, की खोज की गई है।

खोज के मुख्य बिन्दु:

- **याना की पहचान:**
 - याना 50,000 साल पुराना एक मादा बर्फीला हाथी है।
 - इसे अब तक पाए गए सबसे अच्छे संरक्षित हाथी के शरीर के रूप में माना जाता है।
- **याना का आकार:**
 - याना का वजन 100 किलोग्राम से अधिक है।
 - इसकी ऊंचाई 120 सेंटीमीटर है।
- **पर्माफ्रॉस्ट (permafrost) का पिघलना और जलवायु परिवर्तन:**
 - जलवायु परिवर्तन के कारण पर्माफ्रॉस्ट (permafrost) पिघल रहे हैं, जिसके चलते प्रागैतिहासिक जानवरों के और अवशेषों की खोज हो रही है।

मैमथ (Mammoths) के बारे में:

- **प्रजाति और वैज्ञानिक नाम:**
 - हाथी Mammuthus जाति के विलुप्त प्राणी हैं, जिनमें Mammuthus primigenius (ऊनदार हाथी) प्रमुख हैं।
 - ऊनदार हाथी (Woolly Mammoth) हाथियों की सबसे व्यापक प्रजाति थी।
- **IUCN स्थिति:** ये प्राणी विलुप्त हो चुके हैं।
- **विशेषताएँ:**
 - **ठंडी जलवायु के अनुकूल:** इन हाथियों के शरीर पर मोटी फर की परत, वसा की परतें और छोटे कान होते थे, जो तापमान के नुकसान को कम करने में मदद करते थे।
 - **आवास:** ये अफ्रीका, एशिया, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में विभिन्न कालखंडों में पाए जाते थे और हिम युग की ठंडी जलवायु के लिए अनुकूलित थे।
- **समय अवधि:** ये प्राणी **प्लेस्टोसीन युग** (2.6 मिलियन से 11,700 साल पहले) और प्रारंभिक होलोसीन युग (11,700 साल पहले से शुरू) तक जीवित थे।
- **एशियाई हाथियों के साथ समानता:**
 - आनुवंशिकी: एशियाई हाथी, अफ्रीकी हाथियों की तुलना में, हाथियों के अधिक निकटतम रिश्तेदार माने जाते हैं।



पर्माफ्रॉस्ट क्या है?

परिभाषा: पर्माफ्रॉस्ट (स्थायी तुषार-भूमि) वह मिट्टी होती है, जो 2 वर्षों से अधिक समय तक शून्य डिग्री सेल्सियस (32 डिग्री F) से कम तापमान पर जमी हुई रहती है।

विशेषताएँ:

- पर्माफ्रॉस्ट में पत्तियाँ, टूटे हुए वृक्ष आदि के बिना क्षय हुए अवशेष पाए जाते हैं, जिससे यह जैविक कार्बन से समृद्ध होती है।
- जब मिट्टी जमी होती है, तो कार्बन निष्क्रिय रहता है, लेकिन पिघलने पर सूक्ष्मजीवों के कारण इसका अपघटन तेज़ी से बढ़ने लगता है, जिससे वातावरण में कार्बन की सांद्रता बढ़ने लगती है।

स्थान: पर्माफ्रॉस्ट मुख्य रूप से ध्रुवीय क्षेत्रों, अलास्का, कनाडा और साइबेरिया जैसे उच्च अक्षांशीय अथवा पर्वतीय क्षेत्रों में पाया जाता है, जहां सूर्य की गर्मी मिट्टी की सतह को पूरी तरह गर्म नहीं कर पाती।

पर्माफ्रॉस्ट पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:

- **वातावरण में बदलाव:** आर्कटिक क्षेत्र में वायु के तापमान के बढ़ने से पर्माफ्रॉस्ट का गलन शुरू हो गया है, जिससे कार्बनिक पदार्थों का विघटन होकर कार्बन-डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन हो रहा है।
- **तेज़ी से बर्फ पिघलना:** जलवायु परिवर्तन के कारण पर्माफ्रॉस्ट क्षेत्र में तापमान 20वीं सदी से 3.5 प्रतिशत अधिक हो गया है, जिससे बर्फ पिघलने की गति बढ़ रही है।
- **संरचनात्मक प्रभाव:** पर्माफ्रॉस्ट जमी अवस्था में मज़बूत आधार के रूप में कार्य करता है, लेकिन इसके पिघलने से घरों, सड़कों और अन्य बुनियादी ढांचे के नष्ट होने का खतरा बढ़ गया है।
- **ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन:** पर्माफ्रॉस्ट पिघलने पर मृदा में मौजूद जैविक कार्बन का विघटन शुरू हो जाता है, जिससे वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ता है।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !



ANKIT AVASTHI

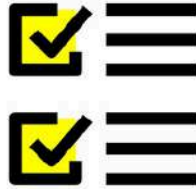


RRB NTPC

TEST SERIES

- ✓ 100+ Mock Test
- ✓ 78 Sectional Test
- ✓ 40+ years PYPs
- ✓ 60+ Current affairs

TEST



Only

99 *Per Year*

Buy Now



GA FOUNDATION

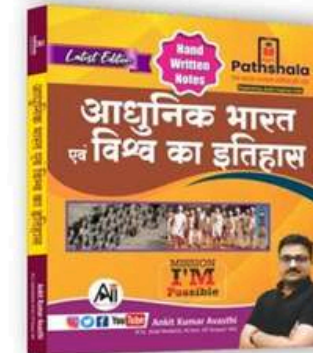
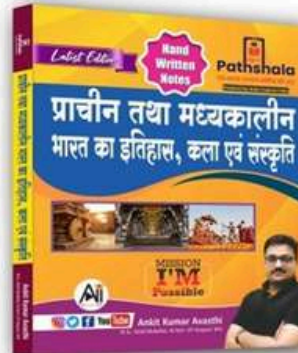
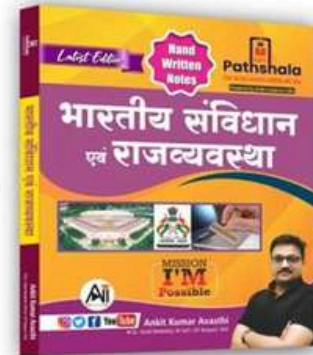
Hand Written
Notes


Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर


Ani
Ankit Inspires India

₹ **Only**
1999

**4 पुस्तकों का
सम्पूर्ण सेट**



अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

 **7878158882**



APNI PATHSHALA

UPPSC, RO/ARO, BPSC, UP TEST SERIES

UPPSC

(TEST SERIES)

- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

RO/ARO

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

BPSC

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299
YEAR

SSC

(TEST SERIES)

- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR

RPF

(TEST SERIES)

- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR



Download | Application
Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

▶ POLITY ▶ ECONOMICS
▶ HISTORY ▶ GEOGRAPHY

FOR ALL

-  DAILY LIVE CLASSES
-  WEEKLY TEST
-  CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
-  LIVE DOUBT SESSIONS
-  DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs

4999/-



Apni Pathshala  7878158882

 Apni.Pathshala  kaankit  AnkitAvasthiSir  Avasthiankit

ONLY POLITY



1499
RS

DAILY LIVE CLASSES

-  WEEKLY TEST
-  CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
-  LIVE DOUBT SESSIONS
-  DAILY PRACTISE PROBLEM

Apni Pathshala



7878158882



Apni.Pathshala



kaankit



AnkitAvasthiSir



Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,
Stenographer (Grades C & D)



Only at

99/- Year

Enroll Now!

